संबंधों में नई जान : भारत और मिस्र के रिश्ते

द हिंदू

पेपर-III (अंतर्राष्ट्रीय संबंध)

मिस्र के राष्ट्रपति अब्देल फतह अल-सिसी के साथ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की मुलाकात के दौरान भारत और मिस्र ने अपने संबंधों को उन्नत कर रणनीतिक साझेदारी तक ले जाने का फैसला किया। यह पश्चिम एशिया-उत्तर अफ्रीका (डब्ल्यूएएनए) क्षेत्र के साथ भारत के संबंधों के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है, जो इनके ऐतिहासिक संबंधों को देखते हुए बहुत दिनों से बकाया था। दोनों देशों ने 1955 में मैत्री संधि पर दस्तखत किए और मिस्र को भारत के समर्थन (जो 1956 में स्वेज नहर संकट के दौरान भी जारी रहा) का नतीजा अंततः 1961 में गुट-नि. रपेक्ष आंदोलन के रूप में सामने आया, जिसमें दोनों देश संस्थापक सदस्य बने। जी-77 समूह और 'दक्षिण-दक्षिण सहयोग' जैसी पहल में भी उनकी सबसे अहम भूमिका रही। शीतयुद्ध के दौरान, भारत और मिस्र अपनी इस इच्छा को लेकर एकजुट रहे कि वे न तो अमेरिका और न ही सोवियत संघ खेमे का अनुयायी बनेंगे। ज्यादा हाल की बात करें तो, यूक्रेन युद्ध को लेकर उनका नजरिया बिल्कुल एक जैसा रहा है। दोनों ने रूसी कार्रवाई की आलोचना करने से इनकार किया, लेकिन इसे अनदेखा भी नहीं किया और कूटनीतिक समाधान का आह्वान किया।

पिछले साल, भारत ने दुनिया के सबसे बड़े गेहूं आयातकों में शामिल मिस्र को गेहूं की आपूर्ति का फैसला किया, जिससे नई दिल्ली को काहिरा में काफी सद्भाव हासिल हुआ। पिछले साल 'काला सागर अनाज पहल' के अस्तित्व में आने से पहले, रूस और यूक्रेन से निर्यात ठप पड़ने की वजह से मिस्र को गेहूं की आपूर्ति बुरी तरह प्रभावित हुई थी। दोनों पक्ष कृषि, पुरातत्व विज्ञान एवं पुरावस्तुओं (एंटिक्विटीज), और प्रतिस्पर्धा कानून के क्षेत्र में समझौता ज्ञापन (एमओयू) के साथ, हरित ऊर्जा, दवा और रक्षा क्षेत्र में नजदीकी सहयोग कर रहे हैं। मोदी का अल-हकीम मस्जिद में जाना और मिस्र के सबसे बड़े मुफ्ती से मिलना, मुस्लिम दुनिया के प्रति अपनी सरकार की नीतियों के बारे में शंकाएं दूर करने की कोशिश जैसा लगा।

इस साल भारत के गणतंत्र दिवस के मुख्य अतिथि रहे राष्ट्रपति अल-सिसी ने मोदी को मिस्र के सर्वोच्च राजकीय सम्मान 'द ऑर्डर ऑफ द नाइल' से नवाजा। यह सम्मान विश्व नेताओं और उन लोगों को दिया जाता है 'जो मिस्र या मानवता को अमूल्य सेवाएं प्रदान करते हैं'। दोनों नेताओं की फिर मुलाकात होगी, क्योंकि सितंबर में दिल्ली में होने वाले जी-20 शिखर सम्मेलन में मिस्र 'विशेष आमंत्रित सदस्य'है। ऐसा लगता

है कि दोनों नेताओं ने बहुपक्षीय मुद्दों, मिस्र के आस-पड़ोस (खासकर इजरायल और सऊदी अरब) में भारत के करीबी रिश्तों, खाद्य एवं ऊर्जा सुरक्षा से जुड़ी बाधाओं, और ग्लोबल साउथ (अफ्रीकी संघ समेत) के साथ ज्यादा सहयोग बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करने में काफी वक्त बिताया है। मार्च में, मिस्र ब्रिक्स (ब्राजील-रूस-भारत-चीन-दक्षिण अफ्रीका) द्वारा स्थापित 'न्यू डेवलपमेंट बैंक' में शामिल हुआ। वह इस समूह (ब्रिक्स) में शामिल होने को भी उत्सुक है, जो इसी अगस्त में केपटाउन में होने वाले शिखर सम्मेलन में नई सदस्यताओं पर विचार करेगा। इसमें मिस्र भारत का समर्थन चाहेगा। ऐतिहासिक संबंधों से शक्ति पाकर, और मौजूदा भू-राजनैतिक उथल-पुथल के थपेड़े खाकर, भारत और मिस्र साफ तौर पर एक ज्यादा करीबी रिश्ते के लिए कोशिश करते दिख रहे हैं। एक ऐसे रिश्ते के लिए जिसकी निगाहें भविष्य की अर्थव्यवस्थाओं और स्वायत्त विदेश नीतियों, दोनों पर हैं।

भारतीय प्रधानमंत्री की मिस्र की राजकीय यात्रा

हाल ही में भारतीय प्रधान मंत्री मोदी ने मिस्र की अपनी पहली राजकीय यात्रा पूरी की। यह 26 वर्षों में किसी भारतीय प्रधान मंत्री की मिस्र की पहली द्विपक्षीय यात्रा थी। इस यात्रा पर प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी को मिस्र के सर्वोच्च सम्मान 'ऑर्डर ऑफ द नाइल' से सम्मानित किया गया। दोनों देशों ने तीन और समझौतों पर भी हस्ताक्षर किए; कृषि और संबद्ध क्षेत्रों पर; स्मारकों और पुरातात्विक स्थलों की सुरक्षा और संरक्षण; और प्रतिस्पर्धा कानून पर।

भारत और मिस्र के बीच संबंधों की पृष्ठभूमि:

15 अगस्त, 1947 को आजादी मिलने के तीन दिन बाद ही दिल्ली ने काहिरा के साथ द्विपक्षीय संबंध स्थापित किए। हालाँकि, उनकी साझेदारी तब फलने-फूलने लगी जब भारत के पहले प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू और मिस्र के दूसरे राष्ट्रपति गमाल अब्देल नासिर करीब आए। दोस्ती की पहली परीक्षा 1956 के स्वेज नहर संकट के दौरान हुई जब नासिर ने मिस्र पर हमला करने के लिए इजराइल और बाद में फ्रांस और ब्रिटेन की ओर जाने वाली नहर का राष्ट्रीयकरण कर दिया।

नेहरू ने काहिरा के खिलाफ आक्रामकता की निंदा करने में कोई समय नहीं गंवाया और विरोधी दलों के बीच मध्यस्थता के लिए कई कदम उठाए, जिसमें अमेरिका से मामले में हस्तक्षेप करने के लिए कहना भी शामिल था।

2 नवंबर, 1956 को पारित अमेरिका-प्रायोजित यूनाइटिंग फॉर पीस प्रस्ताव ने लड़ने वाली सेनाओं को युद्धविराम रेखा के पीछे धकेल दिया और इस शांति समझौते को आइजनहावर-नेहरू फॉर्मूला के रूप में जाना गया।

बाद के वर्षों में, नेहरू और नासिर के बीच संबंध और मजबूत हो गए। उदारवादी और उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलनों के प्रबल समर्थकों, दो करिश्माई नेताओं ने यूगोस्लाविया के राष्ट्रपति जोसिप ब्रोज टीटो, इंडोनेशिया के राष्ट्रपति सुकर्णो और घाना के राष्ट्रपति क्वामे नक्रूमा के साथ गुटनिरपेक्ष आंदोलन (एनएएम) की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इस विशेष रिश्ते के कारण ही भारत मिस्र और अरब जगत के साथ मजबूती से खड़ा रहा जब फिलिस्तीन को लेकर उनका इजरायल के साथ टकराव हुआ - दिल्ली ने 1992 तक तेल अवीव के साथ पूर्ण राजनयिक संबंध स्थापित नहीं किए थे।

1960 के दशक के बाद भारत - मिस्र के प्रगाढ़ संबंधों में एक प्रकार की गिरावट देखी गई।पूरे 1970 के दशक से लेकर और उसके बाद अभी तक ये रिश्ते मात्र व्यापारिक स्तर पर ही रहे हैं।

भारतीय प्रधानमंत्री की मिस्र यात्रा की मुख्य बातें क्या हैं?

पीएम को ऑर्डर ऑफ द नाइल अवॉर्ड:

मिस्र के राष्ट्रपति ने भारतीय पीएम को देश के सर्वोच्च राजकीय सम्मान 'ऑर्डर ऑफ द नाइल' अवॉर्ड से सम्मानित किया है। यह 13वां ऐसा राजकीय सम्मान है जो कई देशों ने पीएम मोदी को दिया है।

समझौतों पर हस्ताक्षर:

द्विपक्षीय संबंधों को "रणनीतिक साझेदारी" तक बढ़ाने के लिए एक समझौते पर दोनों नेताओं द्वारा हस्ताक्षर किए गए।कृषि, पुरातत्व एवं पुरावशेष और प्रतिस्पर्धा कानून के क्षेत्र में तीन समझौता ज्ञापनों पर भी हस्ताक्षर किए गए।

अल-हकीम मस्जिद का दौरा किया :

भारतीय प्रधान मंत्री ने मिस्र के काहिरा में 11वीं शताब्दी की ऐतिहासिक अल-हकीम मस्जिद का दौरा किया। अल-हकीम मस्जिद को भारत के दाऊदी बोहरा समुदाय की मदद से बहाल किया गया था। दाऊदी बोहरा मुसलमान इस्लाम के अनुयायियों का एक संप्रदाय है जो फातिमी इस्माइली तैयबी विचारधारा का पालन करते हैं।ऐसा माना जाता है कि 11वीं शताब्दी में भारत में उपस्थिति स्थापित करने से पहले, उनकी उत्पत्ति मिस्र से हुई थी और बाद में वे यमन में स्थानांतरित हो गए।

हेलियोपोलिस युद्ध कब्रिस्तान का दौरा :

प्रधानमंत्री ने प्रथम विश्व युद्ध के दौरान अपने प्राणों की आहुति देने वाले भारतीय सैनिकों को श्रद्धांजलि देने के लिए काहिरा में हेलियोपोलिस युद्ध कब्रिस्तान का दौरा किया।

संभावित प्रश्न (Expected Question)

प्रश्न : अल-हकीम मस्जिद के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. इसे भारत के दाऊदी बोहरा समुदाय की मदद से बहाल किया गया था।।
2. यह काहिरा में अवस्थित है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1 न ही 2

Que. With reference to the Al-Hakim Mosque, consider the following statements:

1. It was restored with the help of the Dawoodi Bohra community of India.
2. It is located in Cairo.

How many of the above statements are correct?

(a) Only 1

(b) Only 2

(c) Both 1 and 2

(d) Neither 1 nor 2

उत्तर : c

संभावित प्रश्न व प्रारूप (Expected Question & Format)

प्रश्न : 'भारतीय प्रधानमंत्री की हालिया मिस्र यात्रा भारत की अरब नीति का विस्तारीकरण ही है।' क्या आप इस कथन से सहमत हैं? चर्चा कीजिए। (250 शब्द)

उत्तर का दृष्टिकोण :-

- ❖ उत्तर की शुरुआत में भारतीय प्रधानमंत्री की हालिया मिस्र यात्रा के बारे में संक्षेप में चर्चा करें।
- ❖ उत्तर के अगले भाग में अरब देशों के संदर्भ में भारत की नीति की चर्चा करें तथा उसे वर्तमान यात्रा से जोड़ कर दिखाएं।
- ❖ अंत में आगे के परिदृश्य की चर्चा करते हुए संक्षिप्त निष्कर्ष दें।

नोट : अभ्यास के लिए दिया गया मुख्य परीक्षा का प्रश्न आगामी UPSC मुख्य परीक्षा को ध्यान में रखकर बनाया गया है। अतः इस प्रश्न का उत्तर लिखने के लिए आप इस आलेख के साथ-साथ इस टॉपिक से संबंधित अन्य स्त्रोतों का भी सहयोग ले सकते हैं।